मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

BHDC-103

बी. ए. (ऑनर्स) हिन्दी (बी. ए. एच. डी. एच.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2023

बी.एच.डी.सी.-103 : आदिकालीन एवं मध्यकालीन हिन्दी कविता

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *कुल* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।* ***पहला*** *प्रश्न अनिवार्य है।*

---

1. निम्नलिखित काव्यांशों में से किन्हीं **तीन** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 12×3=36

(क) हरि जननी मैं बालक तेरा।
काहे न अवगुन बकसहु मेरा। टेक॥
सुत अपराध करत है केते। जननी कै चित रहैं न तेते॥
कर गहि केस करै जौ घाता। तऊ न हेत उतारै माता॥
कहै कबीर इक बुद्धि बिचारी। बालक दुखी दुखी महतारी॥

(ख) जबहि दीप निअरावा जाई। जनु कबिलास निअर भा आई॥
घन अँबराउँ लाग चहुँ पासा। उठै पुहुमि हुति लाग अकासा॥
तरिवर सबै मलै गिरि लाए। भै जग छाँह रैनि होइ छाए॥
मलै समीर सोहाई छाहाँ। जेठ जाड़ लागै तेहि माहाँ॥
ओही छाँह रैनि होइ आवै। हरिअर सबै अकास दिखावै॥
पंथिक जौं पहुँचै सहि घामू। दुख बिसरै सुख होइ बिसरामू॥

(ग) मधुकर हमहीं क्यौं समुझावत।
बारंबार ज्ञान गीता कौ, अबलनि आगैं गावत॥
नंदनंदन बिनु कपट कथा कत, कहि कहि रुचि उपजावत।
एक चंदन जो अंग छुधा रत, कहि कैसैं सचु पावत॥
देखि बिचारि तुहीं जिय अपने, नागर है जु कहावत।
सब सुमननि फिरि फिरि जु निरस करि, काहैं कमल बँधावत॥

(घ) हीन भएं जल मीन अधीन, कहा कछु मो अकुलानि समानै।
नीरसनेही कों लाय कलंक निरास ह्वै कायर त्यागत प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यों समुझै जड़, मीत के पानि परै कों प्रमानै।
या मन की जु दसा, घनआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै॥

(ड़) रोटी न पेट में हो तो फिर कुछ जतन न हो।

मेले की सैर ख्वाहिशे बागो चमन न हो॥

भूके गरीब दिल की खुदा से लगन न हो।

सच है कहा किसी ने कि भूके भजन न हो॥

अल्लाह की भी याद दिलाती हैं रोटियाँ॥

2. अमीर खुसरो के रचना संसार पर प्रकाश डालिए। 16

3. कबीर के काव्य सौन्दर्य पर विचार कीजिए। 16

4. जायसी के काव्य में चित्रित लोकजीवन के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 16

5. तुलसीदास की भक्ति के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 16

6. रहीम के भाव और कला-पक्ष का मूल्यांकन कीजिए। 16

7. 'रीति सिद्ध कविता में बिहारी का स्थान अन्यतम है।' इस कथन पर विचार कीजिए। 16

8. घनानंद के काव्य के रूप पक्ष को उद्‌घाटित कीजिए। 16

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए : 8×2=16

(क) सूरदास का वात्सल्य वर्णन

(ख) विद्यापति के काव्य में शृंगार

(ग) मीराबाई की विद्रोही चेतना

(घ) नज़ीर की लोकधर्मिता